❀ श्रीसीताराम श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम श्रीसीताराम ❀

※ श्री मैथिली रमणो विजयते ※

* श्रीसीताकृपाकटाक्षस्तोत्रम् *

※

संग्रहकर्त्ता एवं प्रकाशक

स्वामी श्रीसीताशरणजी महाराज

अध्यक्ष श्रीतुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल

श्री रामकोट, श्रीअयोध्याजी।

(उ० प्र०)

※

[श्री गुरु पूर्णिमा, सम्वत् २०३९ वि० सन् १९८२]

※

द्वितीय संस्करण १०००] [न्यौछावर ७५ पै०

❀ श्रीसीताराम श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम श्रीसीताराम ❀

॥ श्री सीताराम चन्द्राभ्यां नमः ॥

१– हमारे जीवन प्राण अधार ।

सुख सुषमा आगार स्वामिनी, श्री अवधेश कुमार ॥१॥

कोटि कोटि रति मदन लजावन, रूप–अनूप अपार ।

मन्द हँसत बतरात परस्पर, ललकि बनत गलहार ॥२॥

निरखत नेह भरे दृग कोरन, तोरत सुमन उतार ।

वारि पियत दोउ वारि वार बहु, पगे परम रस प्यार ॥३॥

राई लोन उतारत तोरत, त्रण होवत बलिहार ।

चञ्चल चखन चितय चित चोरत, दोऊ रसिक उदार ॥४॥

तन मन प्राण करत न्यौछावर, अनमिष रहे निहार ।

गुन शीला चिर जिवो रसिक दोउ, शुभ आशीश हमार ॥५॥

२– परस्पर दोउ पर दोउ बलि जात ।

लखि मुख चन्द्र प्रिया प्रीतम दोउ, अरस परस लपटात ॥१॥

नीलाम्बर पीताम्बर सोहत, श्याम गौर सुठि गात ।

सुषमा निधि दोउ के अँग-अँग पर, बहु रति काम लजात ॥२॥

दै भुज अंश मन्द हँसि हेरत, अद्भुत छवि छहरात ।

बोलत बचन परम रस पागे, सुनि सुनि हिय हुलसात ॥३॥

दृष्टि लगन डर सुमन उतारत, तोरत त्रण सकुचात ।

गुनशीला दोउ की माधुरि लखि, दोउ बिन मोल बिकात ॥४॥

※ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ※

※ अथ श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्रम् ※

—:※※※:—

मुनीन्द्रवृन्द्र वन्दिते, त्रिलोकशोक हारिणि,
प्रसन्नवक्त्र पंकजे, निकुञ्ज भू विलासिनि ।
विदेह भूपनन्दिनि, नृपेन्द्रसुनु संगते,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥१॥

अशोक वृक्षवल्लरी, वितान मण्डपस्थिते,
प्रवाल जाल पल्लव, प्रभारुणाङ्घ्रि कोमले ।
वराभयस्फुरत्करे, प्रभूत सम्पदालये,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥२॥

तडित्सुवर्ण चम्पक, प्रदीप्त गौरविग्रहे,
मुख प्रभापरास्त कोटि शारदेन्दु मण्डले ।
विचित्र चित्र संचरच्चकोर शाव लोचने,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥३॥

अनङ्ग रङ्ग मङ्गल प्रसङ्ग भंगुर भ्रुवा,
सु विभ्रमस्तु संभ्रमद् दृगन्त बाण पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृतावधेश भूपनन्दने,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥४॥

मदोन्मदादियौवने प्रमोदमान मण्डिते,
प्रियानुरागरञ्जिते, कला विलास पण्डिते ।
अनन्य धन्य कुञ्जराजि, कामकेलि कोविदे,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥५॥

अशेष हाव भाव, धीर हीर हार भूषिते,
प्रभूत सात कुम्भ कुम्भ, कुम्भि कुम्भ सुस्तनि ।
प्रशस्त मन्दहास्य, चूर्ण पूर्ण सौख्य सागरे,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥६॥

मृणाल वालवल्लरी, तरङ्ग रङ्ग दोलिते,
लताग्र लास्य लोल नील लोचना विलोकने ।
ललल्लुलन्, मिलन्मनोज, मुग्ध मोहमाश्रये,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥७॥

सुवर्ण मल्लिकांचिते, त्रिरेख कम्बु कन्ठगे,
त्रिसूत मंगुलीगुणाभिरत्न दूर दीप्यते ।
सलोल नील कुन्तले, प्रसून गुच्छ गुम्फिते,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥८॥

नितम्ब विम्ब लम्बमान, पुष्पमेखलागुणे,
प्रशस्त रत्न किंकिणी कलाप मध्य मंजुले ।
करीन्द्र सुण्डदण्डिका, वरोरुशोभगोरवे,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥९॥

अनेक मंजुनाद, मंजु नूपुरारवस्खले,
सुराज राज हंश वंश निःक्वणाति गौरके ।
विलोल हेमवल्लरी, विडम्बि चारु चक्रमे,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥१०॥

अनन्त कोटि विष्णुलोक, नम्रपद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजा प्रलोमजा विरंचिजा वरप्रदे ।
अपार सिद्धि वृद्धि दिग्ध, सत्पदांगुलीनखे,
कदा करिष्यसीहमां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥११॥

मखेश्वरी क्रियेश्वरी, सुधेश्वरी सुरेश्वरी,
त्रिवेद भारतेश्वरी, प्रमाणशासनेश्वरी ।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी, विनोद कामनेश्वरी,
प्रमोदकाननेश्वरी, विदेहजे नमोऽस्तुते ॥१२॥

इतीदमद्भुतस्तवं, निशम्य भूमिनन्दिनी,
करोति सन्ततं जनं, कृपाकटाक्ष भाजनम् ।
भवत्यनेक संचितत्रिरूप कर्म नाशनम्,
लभेत्तथा नपेन्द्रसूनु मन्दिर प्रवेशनम् ॥१३॥

एकायां च नवम्यां च दशम्यां च विशुद्धधीः,
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ।
यं यं कामयते कामं, तं तं प्राप्नोति साधकः,
सीता कृपाकटाक्षेण भक्तिःस्यात्प्रेमलक्षणा ॥१४॥

उरुदघ्ने नाभिदघ्ने, हृदघ्ने कन्ठदघ्नके,
सीताकुण्डे जले स्थित्वा यः पठेत्साधकः शतम्।
तस्यसर्वार्थ सिद्धिःस्यात्वाक्यसामर्थ्यमेव च ऐश्वर्यं च,
लभेत्साक्षाद्दशापश्यति जानकीम् ॥१५॥

तेन सातत्क्षणादेव, तुष्टा दद्योमहावरम्,
तेनपश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियंश्याम सुन्दरम्।
नित्य लीलाप्रवेशं च ददाति श्रीरघूत्तमः,
अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥१६॥

॥ इति श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

—※※—

सिया जू के अरुणारे दोउ तरवा।
मानहुँ अनुरागिन के घरवा॥
क्या गुलाब क्या कमल कटीलो, क्या बड़ लाल अनरवा।
क्या कुसुम जल बुन्द परत ही, बिगरत रंग निचोरवा॥
क्या मखमल क्या सिरस कलंकी, क्या मालती पतरवा।
इनकी कोमलता के आगे, क्या कपोत बट परवा॥
ऊर्ध्व पद्म कल्प तरु अंकुश, रेखन को उजियरवा।
एक एक रेखन पर वारौं, त्रिभुवन को शृङ्गरवा॥
जिनके धोवत डरत "देवता" जनि नुइ परै अतरवा।
इनसे लगन नहीं तो विरथा, दण्ड कमण्डल करवा॥

—※—

।। श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ।।

।। श्रीमति सर्वेश्वरि श्री चारुशीलायै नमः ।।

✻ श्री जानकी चालीसा ✻

दोहाः— जय जय जय श्री जानकी, रसिकन रस दातार ।
कृपा दृष्टि मोहिं हेरिये, दर्शाइय निज प्यार ।।

चौपाई

जय २ श्री मिथिलेश किशोरी । जय रघुवर मुख चन्द्र चकोरी ।।
जय २ जनकनन्दिनी सीते । मृदु स्वभाव अति चरित पुनीते ।।
जय जनकजा जनन हितकारी । क्षमा दया समता चित धारी ।।
जयति अवनिजा कृपा स्वरूपा । रसमय पावन चरित अनूपा ।।
जयति मैथिली रूप उजारी । रघुनन्दन की प्राण पियारी ।।
जय रघुवर रस केलि विलासी । अह्लादिनी शक्ति सुख रासी ।।
जय २ राम रसिक मनहारी । जनक सुता निज जन हितकारी ।।
जयतिअनादिशक्ति अविनासिनि । जयरघुवर रसरंग विलासिनि ।।
जयरासेश्वरि जनक दुलारी । पिय मन चित को चोरन हारी ।।
जय मिथिलेश लली सुकुमारी । रघुवर जीवन प्राण अधारी ।।
जय २ राम प्रेम रस दानी । सरल सुशील कृपा गुण खानी ।।
जयति रसिक जन जीवन मूरी । कीजिय वेगि आश मम पूरी ।।
मृदु हँसि पिय अंशन भुज दीने । निरखौं तुमहिं प्रेम रस भीने ।।
नखसिख युगल स्वरूप निहारी । मैं बहुबार जाउँ बलिहारी ।।

दलि त्रणराई लोन उतारौं । आरति करि निज सर्वस वारौं ॥
जय २ श्री लाड़िली किशोरी । पिय रस रंग रँगी अति भोरी ॥
जय मिथिलाधिप राज दुलारी । जीवन प्राण अधार हमारी ॥
जय रघुनन्दन प्रिय पटरानी । महिमा अमित वेद नहिं जानी ॥
उमा रमा आदिक ब्रह्मानी । सबहिं मुदित तव पद रति मानी ॥
शचि शारदा आदि सब देवी । करहिं सदा पद पंकज सेवी ॥
शरणागत प्राणहुँ ते प्यारो । अस उदार दृढ़ ब्रत तुम धारो ॥
कर जोरे लखि सकत न काहू । करत प्रणाम हृदय सकुचाहू ॥
सोचत काह देउँ मैं याको । निज बनाय राखत ढिग ताको ॥
निरखौं निशिदिन वाट तिहारी । वेगि दर्श दिजिय सुकुमारी ॥
शरण शरण मैं शरण पुकारी । निजकर गहि अब लेहु उबारी ॥
जो बिबसहुँ सिय नाम उचारत । तापर रघुवर तन मन वारत ॥
होइ अनुकूल जपत सिय नामा । वाके बिबस रहत श्रीरामा ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना । करत सदा तुमरो गुण गाना ॥
तवमहिमा कोउपार न पावत । निजनिज मतिसब तवयश गावत ॥
मातु सुनयनहिं आनँद दानी । कीने बाल चरित सुख खानी ॥
लक्ष्मीनिधि की प्राण अधारी । तव छबिलखि नितरहत सुखारी ॥
श्री सिधि प्राणहुँ ते प्रिय मानै । सदा रूप गुण शील बखानै ॥
भूरि भाग्य निमि वंशिन केरी । कीजिय मो पर कृपा घनेरी ॥

चरण दर्श दै अब अपनाइय । द्रुतमम आशा सुमन खिलाइय ॥
मोहिं तव पद तजि और न आशा । काटिय प्रबल मोहकी पाशा ॥
निज स्वरूप मम हृदय बसाइय । मनके सकल विकार नशाइय ॥
सिय जू जीवन मूरि हमारी । दै दर्शन अब करिय सुखारी ॥
हौं पद कंज गहौं अकुलाई । स्वकर उठाय लेहु उर लाई ॥
मृदु बचनामृत सींचि जुड़ाई । शिर पर कर फेरत हर्षाई ॥
बहु प्रकार निज प्यार दिखाई । दीजिय मम दृग सुफल बनाई ॥

दोहा– उदासीन जग ते सदा, तव चरणन की आस ।
सीताशरण सदा करिय, हृदय निकुञ्ज निवास ॥१॥
जग व्यवहार भुलाय के, रटौं निरंतर नाम ।
हिय निकुञ्जमें युगलछवि, लखत रहौं निशियाम ॥२॥
युगल चरणमें निशि दिवस, वास करै मनमोर ।
सीताशरण यही विनय, करौं युगल कर जोर ॥३॥
श्री सिय चालीसा सतत, पढ़ै जो प्रेम विभोर ।
लखै युगल मुखचन्द्र छवि, करि निज नयन चकोर ॥४॥

प्रार्थना

राजेश्वरी सर्वेश्वरी, जगदीश्वरी जनकात्मजे ।
रसिकेश्वरी हृदयेश्वरी, प्राणेश्वरी हे अवनिजे ॥१॥
छवि सागरी नव नागरी, गुण आगरी हे भूमिजे ।
मृदु हँसनिबोलनि मिलनि वारी, सदा जयति विदेहजे ।२।

याचना

हे मम जीवनमूरि कृपामयि राजकिशोरी।
मर्महिय करिय निवास, सदा बिनवौं कर जोरी ॥१॥
तजि तव चरण सरोज, अनत मन भूलि न जावै।
मधुकर इव रस पगो, सतत पद पङ्कज ध्यावै ॥२॥
तव यह युगल स्वरूप, सदा निवसै हिय मेरे।
राखिय अब सर्वदा, मोहिं पद पङ्कज नेरे ॥३॥
भुलि कदा जनि होय, हृदय में विषय विकारा।
कीजिय ऐसी कृपा, गहौं पद बारहिं बारा ॥४॥

सिय जू रानिन में महरानी, और सबै रौतानी।
चितवत भौंह खड़ी कर जोरे, इन्द्रानी ब्रह्मानी ॥
गौरा पान लगावत रचि रचि, रमा पवावत आनी ॥
आठों सिद्धि खड़ीकर जोरें, नवनिधि मनहुं बिकानी ॥
कोटिन ब्रह्माण्डन की प्रभुता, रोम-रोम अरुझानी ॥
जो माया एकै घाटै पर, सबहि पियावत पानी ॥
सोउ चाहत जाकी करुणा को, बार बार सनमानी ॥
जाबिन पातौ हिलि न सकत जो, सबघट माहिं समानी ॥
सन्त जनन की इष्ट "देवता" राम प्रिया जग जानी।

सरस सुधा से सीता :नाम।
जो जन जपे स्वाद सोई जाने, लहै परन अभिराम ॥
देवन सुधापियी पर पुनि-पुनि, पावत बिपति तमाम।
शीताशरण सिया जापक पर, बलिहारी श्रीराम ॥

:—o—:

सिय पिय सुमन श्रृङ्गार सजाये ।

भूषन बसन सजे फूलन के, क्रीट चन्द्रिका सुमन बनाये ॥
सुमनमाल गजरा फूलन रचि, रुचिसों पियसियको पहिराये ।
तैसेहिं प्यारी ने प्रीतम के, अँग अँग सुमन श्रृँगार सजाये ॥
सुमनकुञ्ज में लसत रसिक दोउ, छवि निरखत मन मोद बढ़ाये।
पावत पान पवाय परस्पर, हँसि हँसि कण्ठ लगत सुखपाये ॥
वारिवारि जल पियत छवीले, त्रण तोरत रस सिन्धु समाये ।
बोलत विमल बदन वर वानी, सुधामुधा कलकण्ठ लजाये ॥
प्रीति प्रतीति पगे पिय प्यारी, लेत वलैइया हिय हर्षाये ।
राई लोन उतारि मुदित मन, चितवनि में चितलेत चुराये ॥
परसत चिबुक कपोल रँगे रँग, अधर सुधा चाखत हुलसाये।
गुनशीला गुनगन गर्वीले, रिझवीले दोउ हिय ललचाये ॥

कुञ्ज मधि लसत युगल सरकार ।

गौराङ्गिनि रस पगे मुदित मन, प्रीतम प्राण अधार ॥
सुमन सुकुञ्ज सुमन के भूषन, सुमन सुवसन सँवार ।
सुमन चन्द्रिका क्रीट सुमन के, ललित सुमन के हार ॥
कंकण किंकिणि सुमन बनाई, नूपुर सुमन सुधार ।
गुनशीला पगि प्यार परस्पर, वने रहो गलहार ॥

* पद *

जय जय प्राण अधार, परमरिझवार, रहत बलिहार, श्री किशोरी जू पै। रूप रसिक रसिया रस माते, लखि स्वामिनी सुछवि ललचाते, सुख सुषमा आगार, रूप रस सार, मदन मद मार, रहत वलिहार ॥ श्रीकिशोरी जू पै ॥ सुमन कुञ्जमें सिय सँग राजत, नील पीत अम्बर तन भ्राजत, भूषन सुमन सँवार। चन्द्रिका धार, प्रसून सुहार, रहत वलिहार ॥ श्रीकिशोरी जू पै ॥ अंग अंग छवि निधि मनभावन, प्रेमीजन मन मोद बढ़ावन। अरुण नयन कजरार, मनहुँ असिमार, अलक घुँघरार रहत वलिहार ॥ श्रीकिशोरी जू पै ॥ श्री मैथिली स्वरूप निहारी, पावत मन में मोद अपारी। स्वतन मन वार, वनत गलहार, नृपेन्द्र कुमार, रहत वलिहार ॥ श्रीकिशोरी जू पै ॥ प्रिया संग विलसत रघुराई, छवि निरखत हिय अति ललचाई। सु मृदु मुसुकान, करत कल गान, सखिन सुख दान, रहत बलिहार ॥ श्री किशोरी जू पै ॥ गुनशीला मम दृगन सितारे, जनक लली अवधेश दुलारे। पगे दोउ प्यार, युगल सरकार, सनेह सम्हार, रहत वलिहार ॥ श्री किशोरी जू पै ॥ जय जय प्राण अधार····।

श्री तुलसी प्रेस, श्री रामकोट - श्री अयोध्या जी।